

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीरेकटाधरिगुरुभिरनुगृहीताः  
॥ श्रीरामानुजरर्णनाम्नोकाः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ  
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীরামানুজবর্ণনাম্লোকাঃ ॥

এষা ভূতপুরী নিরীক্ষিতচরী দোষাপহন্ত্রী মযা  
শ্রীমানত্র গুণাঙ্কিরারিরভরদ্রামানুজার্যো মুনিঃ।  
ত্রয্যস্তামৃতসিঙ্কুমস্থনভরদ্ধব্যঙ্গরীনাঅকং  
রিজ্ঞানং যদুপজ্ঞমের রিদুষামদ্যাপি রিদ্যোততে ॥ 1 ॥

কামাদিরৈরিগণভীমানরদ্যনিজনামাভিলাষগরিমা  
রৈমানিকার্যসমভূমা মতৌ রচনসীমাতিলঙ্ঘিমহিমা।  
শ্রীমাননুনকলসোমাননো রিমলধামারমানিতররিঃ  
ক্ষেমাণি জৃম্ভযতু ভূমারমুত্র স চ রামানুজো যতিপতিঃ ॥ 2 ॥

স জযতি রামানুজযতিঃ  
অজযতি পররাদিনং যদীযোক্তিঃ।  
সঞ্জযতি বোধমনঘং  
রঞ্জযতি বুধান্ র্যথাং চ ভঞ্জযতি ॥ 3 ॥

তে মীমাংসাশাস্ত্র -  
প্রমথনপরিকলিতবুধজনানন্দাঃ।  
লক্ষ্মণমুনেঃ প্রবন্ধাঃ  
লক্ষ্মণপূর্জশরা ইর জযন্তি ॥ 4 ॥

রামানুজায় গুররে নররেষভাজে  
শেষায় ধূতকলযে কলযে প্রণামান্।  
যো মাদৃশানপি কৃশান্ পরিপাতুকামঃ  
ভূমাররাতরদুদক্ষিতবোধভূমা ॥ 5 ॥

रामानुजौ यामुनतीर्थसेरा -  
परारुदीतौ नरकं निरौद्वम्।  
तयोः पुराणः प्रणिनाय गीतां  
तस्या नरीनस्तु ततान टीकाम् ॥ 6 ॥

यामुनतीर्थाश्रमिणौ  
रामानुजमुनिर्मुकुन्दश्च।  
आद्यं त्रिरेणुधरमधिकं  
अन्यदस्ताद्यमेकरेणुधरम् ॥ 7 ॥

नित्यं हेयगुणारधूननपरा नैर्गुण्यरादाः श्रुतौ  
मुख्यार्थाः सगुणोक्तयः शुभगुणप्रख्यापनाद्वक्त्रणः।  
अद्वैतश्रुतयो रिशिष्टरिषया निष्कृष्टरूपाश्रया  
भेदोक्तिस्तदिहाखिलश्रुतिहितं रामानुजीयं मतम् ॥ 8 ॥

जयतु जगति लम्हणार्थपक्कः  
जयतु रचः श्रुतिमौलिदेशिकानाम्।  
जयतु निगमरर्त्न निस्सपत्नं  
जयतु चिराय च मूर्तिरङ्गनादौ ॥ 9 ॥

॥ इति श्रीरामानुजरर्णनाल्लोकाः समाप्ताः ॥